गांधीवादी दर्शन में नैतिक व आध्यात्मिक आधार

डॉ0 सरिता कुमारी*

मोहनदास करमचन्द गाँधी को आधुनिक युग का असाधारण पुरुष, प्रगाढ़ देशप्रेमी, महान राष्ट्रीय नेता, श्रेष्ठ समाज सुधारक एवं उच्च कोटी का राजनीतिज्ञ माना जाता है। भारतीय राजनीति के रंगमंच पर महात्मा गाँधी का आगमन ऐसे समय पर हुआ, जब भारतीय राजनीति एक चौराहे पर खड़ी थी। गांधी जी ने अपने अद्‌भूत आन्दोलनो, विचित्र कार्यक्रमों एवं नीतियों के साथ–साथ करिश्माई नेतृत्त्व के माध्यम से भारतीय राजनीति को एक नई दिशा प्रदान की। जिसकी ओर अभिमुख होकर भारत स्वतंत्रता पाने में कामयाब हो सका।

गांधीजी का सामाजिक एवं आर्थिक चिंतन बहुआयामी था। उन्होने न केवल ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध अपना आन्दोलन छेड़ा, बल्कि भारतीय परम्परा के नाम पर हो रही पाश्विक प्रवृत्तियों वाले सामाजिक ढाँचे, रीति–रिवाज और मूल्यों के प्रति भी शंखनाद किया। गांधी जी एक धर्मपरायण और इससे भी बढ़कर एक मानववादी व्यक्ति थे। उनका व्यक्तित्त्व एक सुफियाना संत और यथार्थवादी का स्वदेशी मिश्रण था मानवता के प्रति उत्कट प्रेम ही उन्हें राजनीति में खीच लाया।

वस्तुतः गाँधी जी प्लेटो, अरस्तु, मैकियावेली और मार्क्स की तरह राजनीतिक चितंक नहीं थे, बल्कि सच्चे कर्मयोगी थे। वे वर्तमान भारत के राष्ट्र–निर्माता थे उनके उँचे चरित्र और धार्मिक रुझान को देखकर कविन्द्र रवीन्द्रनाथ टैगोर ने उन्हें 'महात्मा' के नाम से संबोधित किया और आज भी वे महात्मा गांधी के नाम से लोकप्रिय हैं। राजनीति को उन्होंने विशाल धार्मिक और नैतिक लक्ष्य की सिद्धि के लिए अपनाया। अपनी आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' में उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों को निश्छल रुप से व्यक्त किया है। सत्य और अहिंसा के आर्दश उनके जीवन के मूलमंत्र थे। रविन्द्रनाथ टैगोर ने उनके बारे में कहा है कि ''मुझे गांधीजी के विषय में महत्त्वपूर्ण बात यह जान पड़ती है–कि यद्यपि वे राजनीतिज्ञ, संगठनकर्त्ता, लोकनेता एवं नैतिक सुधारक के रुप में श्रेष्ठ हैं, तथापि वे मनुष्य के रुप में इन सबसे श्रेष्ठत्तर हैं, क्योकि इनका कोई भी पक्ष एवं कार्यकलाप उनकी मानवता को मर्यादित नही कर पाता है। इस मनुष्य के गुण महान हैं पर यह मनुष्य अपने गुणों से अधिक महान जान पड़ता हैं।'

सार्वजनिक जीवन में गांधी जी ने भारत की सामाजिक, धार्मिक समस्याओं का अध्ययन किया तथा उनके साथ अपने प्रत्यक्ष साक्षात्कार के आधार पर उन्होने उनके गुणों व दोषों का अध्ययन तथा विश्लेषण किया और उसके फलस्वरुप इन व्यवस्थाओं में जो त्रुटियॉ व कमियॉ उन्हें नजर आई उनमें सुधार लाने का प्रयत्न किया। और ऐसे परामर्श दिए जिनसे इन संस्थाओं व व्यवस्थाओं की गुणवत्ता को बढ़ाकर उन्हें अधिक कल्याणकारी बनाया जा सके। एक व्यापक उदेश्य को सामने रखकर गांधी जी ने भारतीय संस्कृति, धर्म नैतिकता के विभिन्न प्रचलित सिद्धान्तों व अवधारणाओं की पुर्नव्याख्या की ओर उन्हें नए सामयिक अर्थ देकर उन्हें न केवल अपने समय के भारत के लिए, अपितु आने वाले समय के लिए भी प्रासंगिक बनाया। उनके विचारों के नैतिक व आध्यात्मिक आधार निम्नलिखित हैं। –

धर्म–गांधी जी की धर्म में अडिग आस्था थी। वे इसको मानव जीवन तथा मानव समाज का आधारभूत तत्व मानते थे। जिसके अभाव में इनका शून्य व निष्प्राण हो जाना अनिवार्य है। धर्म गाँधी जी के प्रत्येक कार्य एवं प्रत्यके शब्द का प्रधान प्रेरक था। गांधी जी स्वयं कहते हैं कि ''जब से मैने यह जाना है कि सार्वजनिक जीवन क्या है, तब से मेरे प्रत्येक कार्य एवं शब्द के मूल में पूर्ण धार्मिक भावना रही है। धर्म के संबंध में उनके विचार बहुत ही व्यापक हैं। उन्होंने विचार दिया कि यदि हर व्यक्ति अपने धर्म ग्रन्थों तक सीमित रहने के बजाए, दूसरे धर्म ग्रन्थों का भी अध्ययन करे और उनमें जो बातें उसे अच्छी लगे उसे अपने धर्म में शामिल करे तो उसके विचार और अधिक व्यापक बन सकते हैं। साथ ही धर्म ग्रन्थो की, चाहे वे अपने धर्मग्रन्थ हों या पराए धर्मग्रन्थ उनकी केवल उन्ही बातों को मानना चाहिए जो प्रासंगिक हों, कल्याणकारी हों और जिन्हें मानने की आत्मा गवाही देती हो। इस प्रकार गांधी जी ने अधंविश्वास के स्थान पर आत्मानुसरण को एक ऐसे मार्ग के रुप में प्रस्तुत किया जो मनुष्य की सभी गतिविधियों का आधार बन जाए। फिर चाहे वह पारिवारिक हो या सार्वजनिक, सामाजिक हो या धार्मिक, आर्थिक हो या राजनैतिक, स्थानीय हो या राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय।

इस तरह गांधी जी ने धर्म को प्रासंगिक तथा सर्वव्यापक रुप देने की दिशा में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

धर्म एवं राजनीति–गांधी जी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि ''जो लोग यह कहते हैं कि धर्म का राजनीति से कोई संबंध नही है वह यह जानते ही नहीं की धर्म के मायने क्या है।'' उनका यह कथन अपने गुरु गोपाल कृष्ण गोखले के राजनीति के आध्यात्मीकरण की अवधारणा से अत्यन्त प्रभावित था। धर्म से गांधी जी का अभिप्राय नैतिकता के उन आधारभूत नियमों से था, जिन्हें सभी धर्म तथा धर्मानुयायियों ने स्वीकार किया है। धर्म व राजनीति तथा धार्मिक संगठनों तथा राज्य के परस्पर सम्बन्धों पर विचार करते हुए गांधी जी ने धर्मप्रधान अथवा धर्मविहिन राज्य के बजाय, धर्मनिरपेक्ष राज्य के पक्ष मे मत दिया। वे नहीं चाहते थे कि राज्य किसी धर्म विशेष को राज्य–धर्म को स्थान देकर, अन्य धर्मो की उपेक्षा करे या उनके साथ भेद – भाव करे। धार्मिक मामलों में राज्य की नीति सर्वधर्म सम्भाव की होनी चाहिए। उसे सभी धर्मों को समान स्थान व अवसर प्रदान करना चाहिए, तथा सभी धर्मों के मानने वालों के साथ बराबर का व्यवहार करना चाहिए।

स0 प्राध्यापिका (राजनितिक विज्ञान विभाग) जगन्नाथ नगर महाविद्यालय, धुर्वा, राँची

उनके साथ धर्म के आधार पर भेद–भाव नही करना चाहिए। गांधी जी यह भी मानते थे कि धार्मिक संगठनों व राज्य दोनो का कार्यक्षेत्र एक – दूसरे से अलग है। इसलिए न तो राज्य को लोगो के धार्मिक मामलों में दखल देना चाहिए और न ही धार्मिक संगठनों को राजनीति में। इस तरह से गांधी जी राजनीति के आध्यात्मिकीकरण तथा धर्मनिपेक्षीकरण दोनो ही के पक्षधर थे।

नैतिकता व राजनीति – गांधी जी ने राजनीति को आध्यात्मिक आधार देकर उसे स्वच्छ रखने की प्रेरणा दी। वे नीतिशस्त्र को राजनीति तथा अर्थशास्त्र से भी उँचा स्थान देते थे। उनकी दृष्टि में राजनीति उसी सीमा तक वरेण्य थी, जहाँ तक वह नैतिकता के अनुरुप तथा उसकी साधक हो। जहाँ राजनीति नैतिकता के पथ से विचलित हुई, वहाँ वह कलुषित और त्याज्य हो जाती है। वस्तुतः गांधी जी ने सामाजिक, राजनीतिक आर्थिक और धार्मिक जीवन को पृथक – पृथक विभागों में कभी नही देखा बल्कि सम्पूर्ण जीवन को अखंड मानकर धर्म को उसका सार–तत्व समझा। गांधी जी ने धर्म और नैतिकता में कोई अन्तर नही माना। उनहोंने कहा है कि, 'मेरी सत्य – निष्ठा ही मुझे राजनीति के क्षेत्र मे ले आई है, और मैं तनिक भी संकोच किए बिना, परन्तु पूर्ण विनम्रता के साथ, कह सकता हुँ कि जो यह कहते है कि धर्म का राजनीति से कोई सरोकार नही है, वे धर्म का अर्थ ही नही जानते .....। धर्म ही व्यक्ति की सभी क्रियाओं को नैतिक आधार प्रदान करता है जिसके अभाव मे उसका जीवन एक निरर्थक चीत्कार बनकर रह जाएगा। अपने इसी विश्वास के कारण उन्होने अपने चिंतन एवं आचरण को धर्म एवं नैतिकता पर आधारित किया है।

ईश्वर और आत्मा – गांधी जी की ईश्वर में अगाध श्रद्धा थी। उन्होने कहा है कि ''मेरी दृष्टि में ईश्वर परम सत्य एवं प्रेम हैं, ईश्वर निर्भीक है, ईश्वर प्रकाश एवं जीवन का स्रोत हैं, और वह इन सबसे परे एवं उपर भी है। ईश्वर अन्तःकरण है। वह नास्तिक की नास्तिकता है। ईश्वर वाणी एवं बुद्धि से परे है। वह शुद्धतम मूल तत्त्व है। वह केवल उनके लिए है, जिन्हे उस पर विश्वास है।'' गाँधी जी सत्य एवं ईश्वर में कोई भेद नही मानते थे। उनके अनुसार यह कहने के बजाए कि 'ईश्वर सत्य हैं।'' यह कहना चाहिए कि सत्य ईश्वर है। क्योंकि ईश्वर ''सत्य होने के साथ – साथ कुछ और भी है। आत्मा ईश्वरीय तत्त्व है जिसका अस्तित्त्व जड़ शरीर पर निर्भर नही है। आत्मा की शक्ति सबसे महान शक्ति है जिसकी तुलना मे समस्त्र भौतिक शक्तियाँ तुच्छ हैं। उनके सत्याग्रह का सम्पूण सिद्धान्त इस धारणा पर आश्रित है कि आत्मा अमर एवं अजेय है, और सृष्टि के प्रत्येक प्राणी में ईश्वर का यह अंश कुछ न कुछ मात्रा में अवश्य होता है जो दयापूर्ण एवं प्रेमपूर्ण व्यवहार के द्वारा प्रकट हो सकता है।

सत्य और अहिंसा – गांधी जी ने 'सत्य के प्रयोग में लिखा है कि ''मेरे निरन्तर अनुभव ने मुझे विश्वास दिया है कि सत्य से भिन्न कोई ईश्वर नही है। और सत्य की सिद्धि एक मात्र उपाय अहिंसा है। अहिंसा की पूर्ण सिद्धि से ही सत्य का पूर्ण साक्षात्कार किया जा सकता है। वस्तुतः सत्य की सिद्धि या ईश्वर की प्राप्ति एक

ही बात हैः और वही मनुष्य जीवन का लक्ष्य है। अतः विश्व के समस्त जीवों से प्यार करों। धरती का निम्नतम कोटि का प्राणी भी ईश्वर का प्रतिरुप होने के कारण तुम्हारे प्यार का अधिकारी है। उनके विचार में अहिंसा का साकारात्मक पक्ष है – मानव प्रेम। अहिंसक की दृष्टि में कोई भी घृणा का पात्र नही हो सकता पापी भी नही। यदि कोई पापी तुम्हारे सम्पर्क में आता है तो अपने चरित्र – बल से उसे भी पाप – मुक्त करके सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करो। गांधी जी ने ऐसी तपस्या या साधना को प्रोत्साहित नही किया जिससे समाज का कोई हित न हो। वे स्वयं आजीवन सार्वजनिक कार्यों में व्यस्त रहे। उनके अनुसार आत्मशुद्धि के बिना मनुष्य अहिंसा के नियम का पालन नही कर सकता। उसकी आत्मशुद्धि वातावरण को शुद्ध करती हुई दूसरों की आत्मा को भी शुद्ध करती चलेगी, जिससे अन्ततः आर्दश समाज की स्थापना होगी। अहिंसा शक्तिशाली का अस्त्र है। अहिंसक व्यक्ति सत्य के प्रति अनन्य निष्ठा रखकर झूठ की शक्ति को परास्त करने की क्षमता रखता है। सत्य और अहिंसा का यह अटूट संबंध ही सत्याग्रह को जन्म देता है। एक सत्याग्रही कभी पराजय स्वीकार नही करता। वह किसी भी परिस्थति में सत्य के पथ से विचलित नही होता है। स्वयं सत्य पर दृढ़ रहकर ही वही अपने विरोधी का हृदय–परिवतेन करने को तत्पर होता है। सत्याग्रह की इसी विधि को गांधी जी ने स्वराज प्राप्ति हेतु अपनाया। सत्य, अहिंसा और प्रेम के सिद्धान्त धार्मिक श्रेणी में आते है, जो नीतिशास्त्र और नैतिकता से घनिष्ठ रुप से सम्बद्ध हैं। उनकी दृष्टि में आत्मशुद्धि और नैतिकपूर्णता प्राप्त करने के लिए ये सिद्धान्त मार्ग– दर्शक है। इसी कारण वे प्रत्येक सत्याग्रही से कुछ मूलभूत गुणों की विशेष रुप से अपेक्षा करते हैं। – सत्य, अहिंसा, त्याग, अस्तेय, अपरिग्रह, सरल जीवन और ईश्वर में विश्वास– इन नैतिक आदेशों पर वे सदैव बल देते थे। उनका विश्वास था कि मनुष्य की अपनी आकांक्षओं के अनुरुप, व्यक्तियों की नैतिक शुद्धि और आध्यात्मिक उन्नति के द्वारा मनुष्य समाज को अपनी इच्छानुसार बदल सकता है – वह भी उत्पादन के संबंधो और वर्ग शोषण की प्रणाली को बदले बिना। गांधी जी ने इन नैतिक और नीति – शास्त्रीय मूल्यों द्वारा हजारों युवक, युवतियों को आत्मबलिदान के महान कार्यों के लिए उत्प्रेरित किया, सरल और सोद्देश्य जीवन के लिए उनमें उत्साह जगाया। शक्तिशाली अनुशासन की भावना पैदा की। अहिंसा साम्राज्यवाद के विरुद्ध कारगर अस्त्र बन गया। बुराई के अहिंसात्यमक प्रतिरोध में जो दुख और यातनाऐं झेलनी पड़ती थी गांधी जी ने उन कष्टों को एक धार्मिक और नैतिक महत्त्व प्रदान किया।

कर्म एवं पुर्नजन्म – गांधी जी के विचार में कर्म का सिद्धान्त – स्वतंत्रता का सिद्धांत है, जो व्यक्ति को अच्छे और बुरे कार्यों में चुनाव की स्वतुत्रता देते हैं और इसी के अनुसार उसका भाग्य बनता है। गांधी जी की कर्म और पुनर्जन्म के सिद्धान्तों में पूर्ण आस्था थी। वे इसे नैतिकता एवं सद् – आचरण के नियम मानते थे। उनका मानना था कि मनुष्य का पुर्नजन्म इसलिए होता है क्योकि वह अपने पिछले जन्म में सत्य, न्याय व नैतिकता के रास्ते से भटकर, असत्य, अन्याय,

अनैतिकता पाप के रास्ते पर चलाना होता है। अतः आत्मानुसरण के मार्ग पर चलकर इस पुनर्जन्म की प्रक्रिया से मुक्त हुआ जा सकता है। उनका यह भी मानना था कि पुनर्जन्म व्यक्ति को पूर्णता प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है; जिसे प्राप्त करने का उसे पूरा – पूरा प्रयास करना चाहिए।

आत्मानुभूति –

गांधी जी के अनुसार मानव–जीवन का चरम लक्ष्य–आत्मानुभूति है। जिसका अर्थ है–निरपेक्ष सत्य का ज्ञान। इसे व्यक्ति समाज में रहकर तभी प्राप्त कर सकता है जबकि उसमें आत्म–त्याग की भावना हो, क्योंकि यही भावना उसे सामाज के हित के लिए व्यक्तिगत हित का परित्याग की प्रेरणा दे सकती है। व्यक्ति के जीवन का परम लक्ष्य समाज के सभी व्यक्तियों का अधिकतम हित है।

साध्य एवं साधन की पवित्रता–राजनीति और नैतिकता के निकट संबंध को स्पष्ट करने के लिए गांधी जी ने साधन और साध्य दोनो की पवित्रता पर बल दिया। गांधी जी साधन को साध्य से पहले रखते हैं–जैसे साधन होंगे वैसा ही साध्य होगा। यदि साधन अनैतिक होंगे तो साध्य चाहे कितना ही नैतिक क्यों न हो, वे उसे निश्चय ही भ्रष्ट कर देंगे। इसलिए गांधी जी ने स्वराज प्राप्ति के लिए सत्याग्रह का मार्ग दिखाया। उन्होंने बार–बार यह भी कहा है कि ''मेरे लिए अहिंसा का स्थान स्वराज से पहले है।'' वे एक सत्याग्रही को 11 नैतिक व्रतों के पालन का उपदेश देते हैं। सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य अस्तेय, अपरिग्रह, अस्वाद, निर्भीकता, शारीरिक श्रम, सर्वधर्म–समानता, स्वदेशी का व्रत और अस्पृश्यता निवारण आदि। साधन और साध्य की पवित्रता के द्वारा गांधी जी हिंसा के प्रयोग के बिना भारत का आध्यात्मिक राजनैतिक, सामाजिक व आर्थिक पुनर्गठन करना चाहते थे। सर्वधर्म समभाव–गांधी जी नैतिक अनुशासन में सर्वधर्म समानता के सिद्धान्त पर विशेष बल देते हैं। व्यक्ति को सब धर्मों को समान समझना चाहिए और सबका समान रुप से आदर करना चाहिए। धर्म के कारण व्यक्तियों में पारस्परिक द्वेष एवं संघर्ष न होकर एक दुसरे के प्रति सदभाव एवं सहिष्णुता की भावना होनी चाहिए। उनके अनुसार यदि व्यक्तियों में सर्वधर्म समभाव का अभाव है तो उसके व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकास में बाधा आ सकती है। गांधी जी 'यदि एक हिन्दू अच्छा और ईश्वरप्रिय व्यक्ति है, तो एक ईसाई को उससे असंतुष्ट नही होना चाहिए। यदि धर्म का किसी व्यक्ति के आचार–विचार से कोई संबंध न हो तो चर्च, मस्जिद या मन्दिर में एक विशेष प्रकार से उपसना करना एक खोखली बात है। यह व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकास में बाधक हो सकती है।

स्वदेशी व अस्पृश्यता निवारण –

गांधी जी के अनुसार स्वदेशी हमारे अन्दर वह भावना है, जो हम पर यह प्रतिबन्ध लगाती है कि हम अधिक दूर के वातावरण के बजाए पास के वातावरण का उपयोग करें और उसकी सेवा करें। उन्होंने स्वदेशी को उच्च कोटी की आध्यात्मिक देशभक्ति का स्थान दिया है।

गांधी जी ने अपने दर्शन में अस्पृश्यता निवारण को महत्वपूर्ण स्थान दिया है तथा हिन्दू समाज में प्रचलित हुआ–छूत की प्रथा का घोर विरोध किया है। उनकी आस्था सभी लोगों के दैविक, सामाजिक तथा आर्थिक समानता में थी। जब सब प्राणी परमात्मा तथा उसके दैविक कानून के समक्ष समान है, तो समाज व राज्य की निगाह मे भी उन्हे समान ही समझा जाना चाहिए। इस आधार पर उन्होने भ्रष्ट और पतित जाति व्यवस्था पर आधारित छुआ–छूत को अमानवीय माना। छुआ–छुत ऐसी क्रिया है जो न केवल मानव की दैविक व विवेकशील प्रकृति को नकारती है, बल्कि जो असत्य व अन्याय पर आधारित है। इस अनैतिक अमानवीय तथा अन्यायपूर्ण व्यवस्था का अंत करने तथा हरिजनों का उद्वार व कल्याण करने के लिए, गांधी ने अपने सार्वजनिक जीवन के अंतिम तीन दशक लगा दिए। वे चाहते थे कि भारत मे रहने वाले हर व्यक्ति की पहचान धर्म या जाति न होकर एक ही हो, कि वह भारतीय है।

गांधी वादी दर्शन के यह नैतिक एव आध्यात्मिक आधार व्यक्ति को अनुशासित रखने हेतु महत्त्वपूर्ण हैं। इन्हें लागू करके व्यक्ति अपना सुधार तथा आन्तरिक स्वतंत्रता प्राप्त कर सकता है। गांधी जी मानव समाज को वर्तमान दुर्दशा से उबारकर कल्याण की दिशा में ले जाने की परम आदर्श की झलक दिखाते हैं। जिस तक पहुँचने के लिए समाज युगों तक प्रयत्नशील रहेगा। व यथार्थ और आदर्श के बीच का मार्ग भी निर्दिष्ट करते हैं जिसके माध्यम से सामाजिक नवनिर्माण की प्रक्रिया को बढ़ावा दिया जा सके। गांधीजी की त्याग और बलिदान की भावना ने, जनता की सृजनात्मक शक्ति में उनकी अकूत आस्था ने, सामाजिक न्याय और साम्प्रदायिक मैत्री के लिए उनके अथक संघर्ष ने, अस्पृश्यता के विरुद्ध उनके आन्दोलन ने,उनके जीवन व चरित्र की सरलता तथा सादगी ने, पूर्ण स्वतंत्रता के लिए भारत के अन्तिम और निणार्यक संघर्ष के युग को आलोकित कर दिया।

संदर्भ ग्रन्थ :–

1.) रामरतन, त्यागी रुची, 2007 'भारतीय राजनैतिक चिन्तन, नोएडा, मयूर पेपर बैक्स, प्रकाशन

2.) गाबा, ओ0पी0 1998, 'राजनीतिक–चितंन की रुपरेखा, नोएडा, मयूर पेपर बैक्स,

3.) अवस्थी, ए0 पी0 2001 भारतीय राजनीतिक विचारक, आगरा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पब्लिकेशन,

4.) वर्मा वी0 पी0, 2009 आधुनिक भारतीय राजनीतिक चितंन, आगरा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन

5.) त्यागीरुची, 2010 भारतीय राजनीतिक चिंतन प्रमुख अवधारणऐं एवं चिंतक, दिल्ली हिन्दी माध्यम कार्या–वयम निदेशालय,

6.) प्रसाद, महादेव, 1973, महात्मा गांधी का समाज दर्शन

7.) गांधी मोहन दास करमचंद, 1909 हिन्दी स्वराज

8.) दामोदरन, के0 2001, भारतीय चिन्तन परम्परा, नई दिल्ली, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा0) लि0